* किले *

1. लौहगढ़ – भरतपुर → श्रेणी – पारिख
निर्माण – सूरजमल जाट
(19 फरवरी 1733 ई.)

उपनाम → अजय दुर्ग
आकृति – आयताकार

- आयताकार आकृति में बना यह दुर्ग मिट्टी से निर्मित है। जिसके चारो ओर दो विशाल परकोटे है।
- बाहरी परकोटा मिट्टी से व आंतरिक परकोटा पक्का बनाया गया है।
- दोनो परकोटे के मध्य सुजानगंगा नहर बनाई गई है जिसमें अजान बांध से पानी लाया जाता है।
- दुर्ग का उत्तरी प्रवेश द्वार "अष्टधातु द्वार" कहलाता है जिसे 1765 में जवाहर सिंह दिल्ली के लाल-किले से उखाड़ कर लाया।
- यह वही किवाड़ है जिसे 1565-68 में अकबर चित्तौड़ से उखाड़कर दिल्ली ले गया।
- अंग्रेज सेना पति लॉर्ड लेक ने 1805-06 के मध्य इस दुर्ग पर 5 असफल आक्रमण किये। इसलिए "अजेय दुर्ग" कहा गया।
- दुर्ग में 8 विशाल बुर्जिया है जिनमे सबसे मजबूत बुर्ज – जवाहर बुर्ज है।
- 1806 में जवाहर सिंह के द्वारा अंग्रेजों पर फतह के उपलक्ष्य में "फतेह बुर्ज" का निर्माण करवाया।

*- 17 मार्च 1948 को मत्स्य संघ का उद्घाटन इसी दुर्ग के भीतर हुआ।

* मुख्य स्थल →
- वजीर की कोठी, कोठी खास
- किशोरी महल, - दादी माँ का महल
**- गंगा मंदिर
- लक्ष्मण मंदिर।

राजाराममोहन राय की समाधि - ब्रिस्टल

मृत्यु के 12 वाँ = मोसर
ओसर ✗

हाथी → गजराज] मुगल
गजमुक्ता]
मरदाना — मानसिंह
रामप्रसाद / पीरप्रसाद] महाराणा प्रताप
छवाई (रणमा) → अकबर

2. मांडलगढ़ - भीलवाड़ा

श्रेणी — गिरि (बिजासन पहाड़ी पर)
निर्माण — अजमेर के चौहान
* जनश्रुति के अनुसार — चाणना गुर्जर

* इतिहासकारो के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण अजमेर के चौहानो ने करवाया।
* पुरावेत्ताओं के अनुसार यह दुर्ग ईसा पूर्व से ऋषिमुनियो व सिद्धयोगियो की तपोभूमि रहा।
* यहाँ से कर्नल टॉड को विक्रम संवत 1000 का मत्स्येन्द्रनाथ का एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमे इसे "मंडल आकृति दुर्ग" कहा गया। संभवत इसी लिए दुर्ग का नाम "मांडलगढ़" रखा गया।
* जनश्रुती के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण चाणना गुर्जर ने करवाया, लेकिन मांडिया भील के उपकार के कारण इस दुर्ग का नाम "मांडलगढ़" रखा गया।
* दुर्ग सागर व सागरी जलाशय है, जिसमे सागर की सीढ़ियों पर चाणना गुर्जर की छतरी है। इसी दुर्ग पर आपातकाल के लिए दो दरवाजे है जिसे स्थानीय भाषा मे बाड़ी कहा जाता है।
* 1576 मे इस दुर्ग पर अकबर का अधिकार हो गया।
* 1576 मे हल्दीघाटी युद्ध से 1 माह पहले मानसिंह इसी दुर्ग मे ठहरा व शाही सेना का गठन किया।

* प्रमुख स्थल → उडकेश्वर महादेव, जलेश्वर महादेव, चारभुजा मंदिर, चामुण्डा माता का मंदिर, ऋषभदेव जैन मंदिर, जगन्नाथ कछवाह की 32 खंभो की छतरी।

Note * 32 खंभो की छतरियाँ → (1) रणथंभोर मे जेतसिंह की छतरी / न्याय की छतरी (2) मांडलगढ़ - भीलवाड़ा - जगन्नाथ कछवाह की छतरी (3) गागरोन - झालावाड़ — संत पीपा की छतरी / समाधि
(4) पंचकुंड जोधपुर — मानसिंह की कछवाह रानी की छतरी

3. मैगजीन दुर्ग – अजमेर

* श्रेणी – स्थल/भूमि
* निर्माण – अकबर – 1570–71
  (ख्वाजा साहब के सम्मान में)
* उपनाम – * अकबर का किला / अकबर का दौलतखाना
  * मैगजीन दुर्ग

* अकबर द्वारा बनवाया जाने के कारण "अकबर का किला / अकबर का दौलतखाना" कहलाया।
* 1576 में हल्दीघाटी युद्ध को अंतिम रूप इसी दुर्ग में दिया गया तथा अकबर ने युद्ध नेतृत्व यहीं से किया।

* जहाँगीर मेवाड़ व मारवाड़ को अपनी आधीनता में लाने के लिये 3 वर्ष तक इसी दुर्ग में ठहरा। इसी दौरान ब्रिटिश सम्राट जेम्स प्रथम का राजदूत सर थॉमस रो भारत में व्यापार की अनुमति के लिए जहाँगीर से मिला। जिसे जहाँगीर ने स्वीकार कर लिया।
* 1805 में यह दुर्ग अंग्रेजी नियंत्रण में चला गया। जब अंग्रेजों ने अपना शस्त्रागार बनाया तब इसे "मैगजीन दुर्ग" कहा गया।
* 19 अक्टूबर 1908 से इस दुर्ग में एक राजकीय संग्रहालय संचालित है जिसे "राजपूताना म्यूजियम" कहा जाता है।
* इस म्यूजियम में विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) द्वारा संस्कृत भाषा में 4 बड़े-बड़े पाषाण पट्टीकाओं पर लिखे "हरिकेली नाटक" की मूल प्रति रखी है। पहले यह नाटक संस्कृत पाठशाला अजमेर में लगा था।

4. तारागढ़ – अजमेर

* श्रेणी – गिरि (बिठ्ली पहाड़ी पर)
* निर्माण – अजयराज चौहान – 1113 ई.
* डॉ हरबिलास शारदा – अजयपाल चौहान (7वीं सदी)

सर्वाधिक मंगोली आक्रमण - भटनेर दुर्ग
सर्वाधिक देशी आक्रमण - तारागढ़ (अजमेर)

नौलखा प्रवेश द्वार - रणथंभौर
दुर्ग - झालरापाटन
झील - बूंदी
बावड़ी - डूंगरपुर
महल - उदयपुर
बुर्ज - चित्तौड़
तोपे - शाहबाद (बारां)
अन्नभंडार - चित्तौड़

* उपनाम — गढ़बिठली, अजमेरु दुर्ग, अरावली का अरमान, राजपूताना की कुंजी, राजस्थान का जिब्राल्टर
- पूर्व का जिब्राल्टर' (विशप हेबर द्वारा)

* बिठली पहाड़ी पर स्थित होने के कारण लोकगीतों में इसे "गढ़बिठली" कहा गया।
* एक मान्यता के अनुसार शाहजहाँ के सेनापति बिठ्ठलदास गौर ने पुनः निर्माण करवाया। संभवतः इसलिए इस दुर्ग का नाम "गढ़बिठली" रखा गया।

* राणासांगा के भाई पृथ्वीराज ने इस दुर्ग के कुछ भाग बनवाये व अपनी पत्नी "तारा" के नाम पर दुर्ग का नाम "तारागढ़" रख दिया।
* इस दुर्ग पर 1192 में मोहम्मद गौरी का अधिकार हो गया तब यहाँ का शासक पृथ्वीराज चौहान तृतीय था।
* इस दुर्ग ने सर्वाधिक देशी आक्रमणों का सामना किया।

* इसी दुर्ग में हाथी पोल, फूटपोल, भवानी पोल, बड़ा दरवाजा, लक्ष्मण पोल, अमरपोल नामक प्रवेशद्वार है।

* मुगल राजकुमार दाराशिकोह का जन्म इसी दुर्ग में हुआ।
* 1659 में दोराई के युद्ध में पराजित होने पर दारा ने इसी दुर्ग में शरण ली।
* शेरशाह सूरी ने "हफ्ज जमाल" चश्मे (मीठे पानी के झरने) के पानी को जिस तकनीक से ऊपरी भाग तक पहुंचाया उसे "क्षीर-ए-चश्म" कहा गया।
* इसी दुर्ग में तारागढ़ के प्रथम गवर्नर - मीर सय्यद हुसैन खिंगसवार (मीरां साहब) व उनके घोड़े की मजार स्थित है।
* इसी दुर्ग में घूंघट, गूगड़ी, बांदरा, इमली, पीपली, नक्कारची, दोराई, फतेह, फूटी, खिड़की, श्रृंगार चंवरी, जानूनायक, इब्राहीम शहीद, मारपार जी का आदि...
इस दुर्ग पर अकबर ने आक्रमण नहीं किया।

भौमिया (धासभैस) का एकमात्र मंदिर - दौसा

झालरा - धार्मिक कार्यों में टांको का पानी प्रयोग करना।
राजस्थान का सबसे बड़ा झालरा = जैसलमेर
। निर्माण - पालीवाल ब्राह्मण ने (महामंदिर)

जैसी 14 बुर्जियां है।

* मुख्य स्थल :-> नाना साहब का झालरा, गोल झालरा, इब्राहीम का झालरा, बड़ा झालरा
मीरान साहब / मीरां साहब की दरगाह, घोड़े की मंजार।

5. दौसा

* श्रेणी - गिरी (देवगिरी पहाड़ी पर)
* निर्माण - बड़गुर्जरो द्वारा
* आकृति - सूप / छाछले के समान (सूपड़े)

* कहा जाता है कि दुल्हेराय ने यह दुर्ग गुर्जरो व बड़गुर्जरो से जीतकर कछवाहा राज्यवंश की प्रथम राजधानी बनवाया।
* मुख्य स्थल -
हाथीपोल, मोरीपोल नामक प्रवेश द्वार
- नीलकण्ठ महादेव, बैजनाथ महादेव
- *भौमिया का मंदिर, 14 राजाओ की साल

Note -> * जाला बाई की साल - आमेर दुर्ग (जयपुर) व 33 करोड़ देवी-देवताओ की साल मंडोर (जोधपुर) तथा 33 करोड़ देवी-देवताओ का मंदिर जूनागढ़ (बीकानेर) में है।

*6. आमेर-दुर्ग (जयपुर)

* श्रेणी - गिरी (अरावली कालीखोह पहाड़ी पर)
* निर्माण - मानसिंह - I (मुगलमैत्री के परिणाम स्वरूप)
* उपनाम - आम्बिकापुर
- मोमिनाबाद
नींव - दुल्हेराय ने रखी
* शैली - हिन्दू + मुस्लिम

* इस दुर्ग की नींव दुल्हेराय ने रखी।

नागदड़ी
नागादड़ी झील } मंडोर (जोधपुर)

---

* आमेर दुर्ग स्थित मुख्य प्रवेश द्वार गणेशपोल को फर्ग्युसन ने दुनिया का सर्वश्रेष्ठ द्वार रखा।
* गणेशपोल की छत पर स्थित भवन को सुहागमंदिर / सौभाग्य मंदिर कहा जाता है
* इसी दुर्ग मे दिवान-ए-आम व दिवान-ए-खास नामक दो सुन्दर भवन है।
* दिवान-ए-आम की छत को शरद की चांदनी व दिवान-ए-खास को जयमंदिर / शीशमहल कहा गया। जिसमे 1 मोमबत्ती के जलाने से व्याप्ती के सैंकड़ो प्रतिबिम्ब बना जाते है
* शीशमहल का निर्माण मानसिंह प्रथम ने आगरा दुर्ग मे बने शीशमहल के आधार पर करवाया। ~~जिसके~~
* बालाबाई की साल नामक छोटा गढ़ इसी दुर्ग मे है।
* सुख मंदिर नामक भवन ग्रीष्मकाल मे राजाओ का निवास स्थान था।
* दुर्ग मे स्थित दौलाराम बाग अपनी खुबसुरती के लिए जाना जाता है।
* दुर्ग के नीचे मावठा झील स्थित है जिसमे केसरी क्यारी व मोहनबाड़ी दो सुन्दर जलउद्यान है। इसलिए
* बिशप हैबर ने लिखा कि ~~कि~~ "मैंने क्रेमालिन में जो देखा अलब्रह्मा के विषय में जो सुना, यह तो उससे भी बढ़कर है।"

* 1707 में बहादुरशाह (मुअज्जम) ने इस दुर्ग पर विशाल सेना सहित आक्रमण किया तथा दुर्ग का नाम बदलकर मोमिनाबाद रख दिया व बहादुरशाह प्रथम के नाम से दुर्ग पर अधिकार कर लिया। तब यहाँ का शासक सवाई जयसिंह (जयसिंह II) था।

* यह हिन्दु देवी-देवताओ के मंदिरो के लिए विख्यात है- जिसमे जगतशिरोमणि का मंदिर, अम्बिकेश्वर मंदिर, नृसिंहमंदिर शिलादेवी का मंदिर प्रमुख है।

2½ प्याला शराब का भोग - जीण माता - प्रतिबंध
वर्तमान - भांवलमाता - मेड़ता नागौर

1. जगत शिरोमणि का मंदिर →

* निर्माण → मानसिंह प्रथम की रानी कनकावती द्वारा पुत्र जगतसिंह की याद में
* इस मंदिर में श्रीकृष्ण की काले पत्थर डेढ़ फीट (1½) वाली प्रतिमा है जिसकी पूजा मीरा वृंदावन में करती थी।
* मानसिंह इस मूर्ति को चित्तौड़ से लाया था।

2. अम्बिकेश्वर मंदिर →
निर्माण - कोकिलदेव

3. नृसिंह मंदिर →
निर्माण - कृष्णदास जी पयहारी (पेयपदार्थ का सेवन)
* इन्होंने राजस्थान में रामानंदी सम्प्रदाय की स्थापना भी की थी।

4. शिलादेवी का मंदिर →
निर्माण - मानसिंह प्रथम
* शिलादेवी की मूर्ति को मानसिंह प्रथम विक्रमपुर बंगाल के राजा केदार से छीनकर लाया था।
* मंदिर का निर्माण पाल शैली (बंगाल) में किया। जिसके किवाड़ सोने-चांदी के बने है।
* मंदिर में शिलादेवी की काले पत्थर की बनी अष्टभुजी प्रतिमा है जिसकी पूजा महिषासुर मर्दिनी के रूप में होती है।
* मंदिर में भक्तो की इच्छानुसार जल / मंदिरा का चरणामृत दिया जाता है।

* मुख्य स्थल - रंग-महल
- दिल-खुश महल
- शीश महल

पुस्तक प्रकाश पुस्तकालय | महल - मेहरानगढ़ | जोधपुर
राजस्थानी चित्रकला का स   मानसिंह (मारवाड़वाला)

7. नाहरगढ़ - (जयपुर)

* श्रेणी - गिरि
* निर्माण - सवाई जयसिंह (1734 ई) (जयसिंह द्वितीय)
(मराठों से बचने के लिए)
* शैली - दिल्ली के लाल किले पर आधारित
* उपनाम - जयपुर का पहरेदार
  - जयपुर का मुकुट
  - सुदर्शन गढ़ (सुदर्शन चक्र से श्रीकृष्ण ने कुंए का निर्माण)
  - महलों का दुर्ग, रावलों का दुर्ग

* कहा जाता है कि निर्माण कार्य प्रतिदिन रात्री के समय ध्वस्त हो जाया करता था। किसी तांत्रिक (रत्नाकर पौण्डरिक) से पूछने पर बताया कि नाहरसिंह भोमिया नाम का कोई व्यक्ति (भूत) परेशान कर रहा है तो दुर्ग के भीतर नाहरसिंह की छतरी बनवाई गई, इसलिए दुर्ग का प्रारंभिक नाम "नाहरगढ़" रखा गया।
* माधोसिंह द्वितीय ने अपनी 9 पासवानों के लिए सूरज प्रकाश, चांदप्रकाश, फूलप्रकाश, लक्ष्मीप्रकाश, आनन्द प्रकाश, जवाहर प्रकाश, ललित प्रकाश, खुशहाल प्रकाश, बसन्त प्रकाश एक जैसे 9 दुर्ग बनवाये, इसलिए इसे "महलों का दुर्ग, रावलों का दुर्ग" कहा गया।

* मराठों से बचने के लिए बनवाया जाने के कारण यह "जयपुर का पहरेदार" कहलाया।

* दूर से देखने पर मुकुट के समान प्रतीत होता है इसलिए "जयपुर का मुकुट" कहलाया।

* इस दुर्ग में श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र से बना एक कुंआ है इसलिए इसे "सुदर्शन गढ़" कहा गया।

* जगतसिंह II ने अपनी एक रखैल रसकपूर को

इसी दुर्ग में कैद किया जहाँ से वह भाग निकली)

8. जयगढ़ - जयपुर

* श्रेणी - गिरी (चिल्ह का टीला पहाड़ी / ईगल की पहाड़ी पर)
* निर्माण - मिर्जाराजा जयसिंह
* N·H शावर्स के अनुसार - मानसिंह प्रथम
* वास्तविक स्वरूप - सवाई जयसिंह ने दिया (आपातकालीन निवास के लिए)
* उपनाम - चिल्ह का टीला / चिल्ह का टोला रहस्यमय दुर्ग

* यह दुर्ग आपातकालीन निवास के लिए बनवाया गया इसलिए इसमे 3 दरवाजे है -
1. डूँगर दरवाजा 2. अवनी दरवाजा 3. भैरू दरवाजा

* यह दुर्ग रहस्यमयी दुर्गों के श्रेणी में आता है क्योंकि इसमें कई सारी गुप्त सुरंगे है जो नाहरगढ़ होते हुए आमेर से जुड़ी हुई है
* इन्ही गुप्त सुरंगो के भीतर मानसिंह द्वारा तोप ढालने का कारखाना बनवाया गया। जिसे "सिलहखाना" कहा जाता है।
* इसी सिलहखाने में सवाई जयसिंह द्वारा *एशिया की सबसे बड़ी तोप "जयबाण / रणबंका" का निर्माण करवाया गया। जो वर्तमान में पहियो पर रखी है।
* "लेथ मशीन" पर निर्मित यह दुनिया की एकमात्र तोप है।

* 50 टन वजनी यह तोप 14 मण, 14 kg, 14 छटांग (574·140 kg) का गोला दागने में सक्षम है।
* जिसकी मारक क्षमता 22 मील (लगभग 40 km) है। 1 मील= 1·6/1·8 km
* इसकी नली की लम्बाई - 20·7 फीट व 7·2 फीट - व्यास है।

* सवाई जयसिंह ने इस तोप को परीक्षण के तौर पर एक

वार चलाया तब इसका गोला चाकसू (जयपुर) में गिरा। जिससे गोलेलाव / बांस तालाब का निर्माण हुआ।

* जयगढ़ दुर्ग पर कभी शत्रुसेना ने आक्रमण नहीं किया।
* जल संरक्षण के लिए बनाये गये "पानी के टांके" इस दुर्ग की सबसे मुख्य विशेषता है।
* जब मानसिंह प्रथम ने इस स्थान पर अपना गुप्त खजाना छिपाया तो इसे "चिल्ह का टीला" कहा गया।
* वर्ष 1975 में इन्दिरागांधी के शासन काल में दुर्ग में छिपे तिलस्मी खजाने की खोज के लिए एक व्यापक अभियान चलाया जो विदेशी चर्चा का विषय बना रहा।

* जयगढ़ दुर्ग के भीतर एक और दुर्ग है जिसे "विजयगढ़ी" कहा जाता है। यह राजनैतिक बंदियों का कैदखाना है।
* इसमें कैद किया गया एक भी व्यक्ति आज तक जीवित नहीं लौटा।
* सवाई जयसिंह ने अपने भाई "विजयसिंह" को यहीं कैद किया था।
* विजयगढ़ी के भीतर एक 7 मंजिला प्रकाश स्तम्भ है जिसे "दीया बुर्ज" कहा जाता है।

* मुख्य स्थल → जलेब चौक, राणावत जी का चौक
  - रामहरिहर व कालभैरव मंदिर
  - लक्ष्मी निवास, ललित मंदिर
  - विलास मंदिर, आराम मंदिर, सूर्य मंदिर

9. गागरोन - झालावाड

* निर्माण - डोडराजा । बिजलदेव 1195 ई.
* श्रेणी - जल (कालीसिंध + आहू के संगम पर)
* उपनाम - गर्गाटपुर
  - डोडगढ़ / धुलरगढ़ - बिजलदेव
  - गागरोन
  - मुस्तफाबाद

* यह दुर्ग बिना किसी नींव के एक चट्टान पर बनाया गया है।
* प्रारंभिक समय में भगवान श्रीकृष्ण के पुरोहित गर्गाचार्य की तपोभूमि था इसलिए इसे "गर्गाटपुर" कहा गया।

* कुछ समय बाद गागरोन में खींची राजवंश के संस्थापक देवनसिंह (धारू) ने यह दुर्ग डोडराजा बिजलदेव से जीत लिया व दुर्ग का नाम बदलकर "गागरोन" रख दिया।

* प्रारंभिक समय में *कोटा राज्य के राजनीतिक बंदियों का कैदखाना था।
* दुर्ग के चारों और फैला परकोटा 'जालिमकोट' कहलाता है।
* इसी के पीछे गिधकराई पहाड़ी है। जब किसी शत्रु को

* दुर्ग के चारों ओर फैला वन "आमखर वन" कहलाता है। जिसमें "राया प्रजाति के तोते" पाये जाते हैं जो मानव की हुबहु भाषा बोलते हैं।
* रानी पद्मिनी का हीरामन तोता इसी प्रजाति का था।

* इसी दुर्ग के भीतर 1425 ई (+57 विक्रम संवत 1482) में *संतपीपा का जन्म हुआ जिन्होंने गागरोन का शासक रहते दिल्ली के फिरोजशाह तुगलक से युद्ध किया। युद्ध के बाद हृदय परिवर्तन हुआ और बनारस चले गये और "रामानंद को गुरु"

केसरिया जौहर
राजा + रानी
साका

संत पीपा के गुरु - रामानंद

बनाया। कुछ समय बाद गागरोण आ गये और सम्पूर्ण राजकार्य अपने भतीजे भोजराव को सौंप कर आजीवन दर्जी का कार्य किया।

* इन्होंने गागरोन का शासक रहते मालवा (गुजरात) के मलीक जफ़रफिरोज व लल्लन पठान से भी युद्ध किया।
* दुर्ग में अरदा व ढेकुली पत्थर की बौछार करने वाले, व मजनी - आग की बौछार करने वाले पाषाणकालीन यंत्र रखे है।

* दुर्ग के भीतर इतिहास प्रसिद्ध 2 साके हुये →

*प्रथम साका → 1423

इस समय माण्डू सुल्तान होशंगशाह (अल्प खाँ गौरी) ने आक्रमण किया तब यहाँ का शासक अचलदास खींची वीरगति को प्राप्त हुआ तथा लाला मेवाड़ी (पत्नी) ने जौहर किया।

*द्वितीय साका → 1444

इस समय माण्डू सुल्तान महमूद खिलजी ने आक्रमण किया तब यहाँ का शासक पल्हण सिंह वीर गति को प्राप्त हुआ। सैकड़ो वीरांगनाओ ने जौहर किया।

* महमूद खिलजी ने इस दुर्ग का नाम बदलकर "मुस्तफाबाद" कर दिया।
* कुछ समय बाद यह दुर्ग राणासांगा ने जीतकर मेदिनीराय को सौंप दिया।
* दुर्ग पर अलग - अलग समयों में अलग-2 आक्रमणकारियों का अधिकार रहा।

जैसे - 1532 - बहादुरशाह
1542 - शेरशाह
1561-62 - अकबर Trick - " बशे अकबर "

* अकबर गुजरात अभियान पर जाते समय 1 रात इसी दुर्ग

मामा-भांजा मंदिर - अटरू (बारां)

में ठहरा। व फैजी (अबुलफजल का बड़ा भाई व अकबर का नवरत्न) से प्रथम मुलाकात की।

* मुख्य स्थल → अचलदास खींची के महल
- औरंगजेब निर्मित बुलंददरवाजा
* सिक्के ढालने की टकसाल
- लकड़ी का उठने वाला पुल
* संत पीपा की छतरी / समाधि
- मिट्ठेशाह की दरगाह / हमीदउद्दीन चिश्ती मिट्ठेमहबली की दरगाह
- मधुसूदन जी का मंदिर - शीतला माता का मंदिर
- नक्कारखाना
- बारूदखाना

10 मेहरानगढ़ - जोधपुर

* श्रेणी - गिरी (चिड़ियाटूक पहाड़ी पर)
* निर्माण - राव जोधा 13 मई 1459 ई.
* प्रारंभिक नाम - गढ़ चिंतामणि

* उपनाम - मोरध्वज / मयूरध्वज
- जोधाणा
- जबरीगढ़

* कहा जाता है कि मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
* दुर्ग की नींव में राजिया बलाई (राजिया भाम्बी) नामक जीवित व्यक्ति को गाड़ दिया गया। उसके ऊपर खजाने की इमारत बनाई गई।
* जब दुर्ग का निर्माण कार्य पूरा हुआ तो एक अनुष्ठान का आयोजन करवाया जिसमें ब्राह्मण के कलेजे की आहुति दी गई तथा उसी की स्मृति में ब्राह्मण देवता की छतरी बनवाई। इसीलिए दुर्ग का प्रारंभिक नाम "गढ़ चिंतामणि"

कोबरा एम्ट -1986 ("उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम")

माइक्रोसॉफ्ट कंपनी का संस्थापक - बिलगेट्स

राईका बाग पैलेस - जसवंतसिंह -I - पत्नी हाड़ीजी - 1663ई. जोधपुर में अनार की खेती काबुल से

1883 - जसवंतसिंह -II - "नन्हीजान" (प्रेमिका)

रखा गया।

* दूर से देखने पर मयूर के समान प्रतीत होता है इसीलिए मयूरध्वज गढ़ / मोरध्वज गढ़ कहा गया।

* जोधपुर में स्थित होने के कारण जोधाणा व अपनी विशालता के कारण गढ़चिन्तामणि कहलाया।

* लाल बालुका पत्थर से निर्मित यह दुर्ग 2 मंजिला है जिसमें 101 बुर्जिया है जो अपने पत्थरो की नक्काशीदार कटावें, जालियो झरोखो और मेहराबो के लिए प्रसिद्ध है। इसलिए रूडयार्ड किपलिंग ने लिखा कि "यह दुर्ग फरिश्तो, परियो व देवताओ की करामात है।" (1886)

* जेकलिन केनेडी ने इसे विश्व का आठवाँ आश्चर्य कहा।

* बिल गेट्स ने मेहरानगढ़ दुर्ग के प्राचीर पर खड़ा होकर दुर्ग को "ब्लू सिटी" कहा।

* वीर शिरोमणि दुर्गादास राठौर कीरतसिंह सोढा, धन्ना व भींवा के अतुल्य पराक्रम की कहानियां इसी दुर्ग से जुड़ी है।

* धन्ना व भींवा यहाँ के दो सेनापति थे जिनकी छतरियाँ लोहपोल के समय बनी, जिसे मामा-भांजा की छतरियां कहते है।

* इसी दुर्ग के भीतर वर्ष 1906 में जसवंत सिंह की स्मृति में सरदार सिंह द्वारा 'जसवंत थड़े" का निर्माण करवाया गया जिसे "राजस्थान का ताजमहल" बनवाया। **

(जसवंत सिंह का चबूतरा)

* इसी दुर्ग में भवानी, कड़क बाण, बिच्छु बाण, गजनी खाँ, घुड़बाणी, जमजमा, किलकिला, शंभु बाण, नुसरत, गुब्बारा, नागपली, गजक, बागसबाज, मधाता, मीरबख्श, मीरकचंग, रहस्यकला, व्यांघी, आदि अनेक तोपे रखी है।

* इसी दुर्ग में चामुंडामाता व नागणेची माता के भव्य मंदिर है। 30 सितम्बर 2008 को चामुण्डामाता के मंदिर की सीढ़िया

दयानंद सरस्वती राजस्थान में पहली बार उपदेश - खेतड़ी (झुंझुनु) 1883 में
नन्ही जान ने जहर दिया - विष - दूध में महीन कांच
(अजमेर में मृत्यु - उदरपीड़ा)

हाथी कुंड - चित्तौड़

तेलंगाना का गठन - श्रीकृष्णा आयोग

किरिटपारिक समिति - पेट्रोल-डीजल से संबंधित

उत्तराखंड बाढ़ के पीड़ितों के लिए - ऑपरेशन सूर्यदीप ऑपरेशन

टूटने के कारण भगदड़ मच गई। जिसमें 200 व्यक्ति मारे गये। इस घटना की जाँच के लिए जसराज चौपड़ा की अध्यक्षता में "चौपड़ा आयोग" का गठन किया गया।

* मेहरानगढ़ के चौखेला महल में "मार्शल टाइप बॉबी" का प्रयोग किया गया।

* प्रमुख स्थल →

* मानसिंह निर्मित पुस्तक प्रकाश पुस्तकालय
*- तख्तसिंह निर्मित सिणगार चौकी / श्रृंगार चौकी
- अभयसिंह निर्मित आनन्दघन व मुरली मनोहर जी का मंदिर व फूलमहल
- अजीतसिंह का फतेहमहल
- सूरसिंह का मोतीमहल
*- भूरे खाँ की मजार
- पदमसर व रानीसर नामक 2 जलाशय
- गुलाबसागर व गुलाबसागर का बच्चा नामक दो अन्य जलाशय
- ख्वाबगाह महल
- बिचलामहल , - चौखेला महल / चौखेलाव महल
- तख्तविलास
- अजीतविलास
- उम्मेदविलास
- फतेह, विलास , - रंग महल , - जनाना महल , - हाथी महल
- चंदनमहल

11. भटनेर दुर्ग - हनुमानगढ़

* श्रेणी - धान्वन (घग्घर नदी के किनारे)
* निर्माण - भूपत भाटी - 285 ई.
* उपनाम - उत्तरी सीमा का प्रहरी
  - उत्तर भड़ किवाड़ *
  - राज्य का सबसे प्राचीन दुर्ग / प्राचीनतम
  - हनुमानगढ़

* उत्तर से आने वाले आक्रमणकारियों से सुरक्षा करने के

* तैमूर ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि "मैंने इतना मजबूत व सुरक्षित किला पूरे हिन्दुस्थान में नहीं देखा।"

कारण उत्तर भड़कीवाड़ कहा गया।

Note -> राजस्थान में "उत्तर भड़कीवाड़" नाम का दूसरा दुर्ग सोनारगढ़ - जैसलमेर है।

* 1398 में तैमूर लंग ने इस दुर्ग पर आक्रमण किया तब यहां का भाटी शासक दूलचंद वीरगति को प्राप्त हुआ।
** 1805 में बीकानेर के सूरतसिंह ने इस दुर्ग पर आक्रमण किया तब यहाँ का शासक जाब्ता खाँ मारा गया। इस समय मुस्लिम महिलाओं ने जौहर किया। जो राज्य का एकमात्र उदाहरण है।
* इस दिन मंगलवार था इसीलिए दुर्ग का नाम "हनुमानगढ़" रख दिया।
* 52 बीघा जमीन पर बना यह दुर्ग "मिट्टी से निर्मित" है। जिसमें 52 विशाल बुर्जियां हैं।

12. चूरू दुर्ग - चूरू

* श्रेणी - धान्वन
* निर्माण - कुशालसिंह 1694 ई.
* उपनाम - चाँदी के गोले दागने वाला दुर्ग (कांसा नहीं दागे)
  - राष्ट्रीयता का प्रतीक

* 1857 की क्रांति के समय अंग्रेजों ने बीकानेर की संयुक्त सेना के साथ इस दुर्ग पर आक्रमण किया। तब यहां के शासक शिवसिंह ने अंग्रेजों का जमकर मुकाबला किया लेकिन कुछ समय बाद गोला बारूद खत्म हो गया तो लोहे के गोले बनाये गये लेकिन कुछ समय बाद सीसा + जस्ता (लोहा) भी खत्म हो गया। तब शिवसिंह को यहां के सामंतों ने घरों में रखी चांदी लाकर दी तब शिवसिंह ने अंग्रेजों पर चांदी के गोले दागे जिसे देखकर अंग्रेज भयभीत हो गये और कहा

मूर्तियोंका अजायबघर - कीर्ति स्तम्भ /विजय

"इससे बड़ा राष्ट्रीयता का प्रतीक नहीं हो सकता"।

13. तिमनगढ़ - करौली

* श्रेणी - धान्वन
* निर्माण - विजयपाल के पुत्र तिमन द्वारा
* उपनाम - मूर्तियों का खजाना

* इस दुर्ग में अष्टधातु और पत्थर की सर्वाधिक मूर्तियां है इसीलिए इसे "मूर्तियों का खजाना" कहा गया।

14. बयाना - भरतपुर

* श्रेणी - गिरी
* निर्माण - यदुवंशी शासक विजयपाल
* उपनाम - विजयमंदारगढ़
  - बाणासुर का किला

* राजस्थान की सर्वाधिक कब्रे, समुद्रगुप्त द्वारा बनवाया गया राजस्थान का प्रथम विजय स्तम्भ है।
* इसी दुर्ग में रानी चित्रलेखा ने लाल पत्थर से एक "लाट" (स्तम्भ) का निर्माण करवाया। जिसे उषा लाट/ भीम लाट कहा जाता है।

* मुख्य स्थल ->
  - ऊषा मंदिर
  - उषा मस्जिद
  - जहांगीरी दरवाजा (जहांगीर के महल - अजमेर)
  - लोदी मीनार
  - अकबरी छतरी / समाधि (अकबरी महल - नागौर)

15. बाला दुर्ग – अलवर

* श्रेणी – गिरी
* निर्माण – निकुंभ क्षत्रिय रघुराय
* उपनाम – रावण - देहरा

* हसन खाँ मेवाती ने इस दुर्ग की मरम्मत करवाई।
* 1775 में प्रताप सिंह कछवाहा (जयपुर) का अधिकार हो गया।

* मुख्य स्थल – सलीम महल
  – जल महल
  – निकुंभ महल
  – अंधेरी दरवाजा
  * सीता-राम जी का मंदिर

Note → डीग (भरतपुर) को जलमहलों की नगरी कहा जाता है। इन महलों का निर्माण सूरजमल जाट ने करवाया था लेकिन डीग का किला का निर्माण बदनसिंह जाट ने करवाया।

16. कुम्भलगढ़ – राजसमंद

* श्रेणी – गिरी (अरावली की जरगा / हेमकूट नंदवती पहाड़ी पर)
* निर्माण – राणाकुंभा (1448-1458 ई.)
*** शिल्पकार – मंडन मिश्र
* उपनाम → मेवाड़ मारवाड़ सीमा का प्रहरी
  – मेवाड़ शासकों की शरण स्थली
  – मछीन्दर का कीला
  –* एस्ट्रुकन दुर्ग के समान (कर्नल जेम्स टॉड द्वारा)

* कहा जाता है कि महाराणा कुंभा ने अपनी पत्नी कुम्भलदेवी की याद में बनवाया।
* जब दुर्ग का निर्माण कार्य पूरा हुआ तो सिक्के ढलवाये जिन पर "कुम्भलमेर जयते" लिखवाया। संभवत: इसीलिए

दुर्ग का "कुम्भलगढ़" रखा गया।
* यह दुर्ग मेवाड़ व मारवाड़ सीमा का प्रहरी माना जाता है जो संकटकाल में मेवाड़ शासकों की शरण स्थली है।
* महाराणा कुंभा की हत्या, राणा सांगा व पृथ्वीराज का बचपन, उदय सिंह का लालन-पालन तथा महाराणा प्रताप का विधिवत राजतिलक (दूसरा राजतिलक) जैसी सभी घटनाएं इसी दुर्ग में घटित है।

Note → * महाराणा प्रताप का प्रथम राजतिलक होली के दिन गोगुन्दा में "महादेव बावड़ी" के तट पर हुआ।

* कुम्भलगढ़ दुर्ग के भीतर एक सुन्दर भवन है जिसे "वेदी" कहा जाता है जो भारत की सबसे बड़ी "यज्ञशाला" मानी जाती है।
* इस दुर्ग का परकोटा सबसे बड़ा परकोटा है जिसे "भारत की महान दीवार" कहते है। जो 36 Km. लम्बा, 7 मीटर चौड़ा है।

* अबुल-फजल ने लिखा कि "यह दुर्ग इतनी ऊंचाई पर बना है कि नीचे से देखने पर सिर की पगड़ी गिर जाती है"

* कर्नल टॉड ने इस दुर्ग की तुलना एस्ट्रुकन दुर्ग (जर्मनी) से की है।
* हल्दीघाटी युद्ध के बाद 1578 ई. में शहबाज खाँ के नेतृत्व में अकबर का अधिकार हो गया। तब यह दुर्ग प्रथम बार मुगलों के हाथ लगा जिसे प्रताप ने पुनः जीत लिया।
* इसी दुर्ग के भीतर एक और दुर्ग है जिसे सीधी चढ़ाई के कारण "कटारगढ़" कहा जाता है। जो कुंभा का निवास स्थान माना जाता है।
* कटारगढ़ को "मेवाड़ की तीसरी आँख" कहा जाता है।
* इसी कटारगढ़ में बादल महल में विक्रम संवत 1597 ईस्वी संवत 9 मई 1540 जेष्ठ शुक्ल तृतीया

* रविवार के दिन अखैराज सोनगरा की पुत्री जयन्ता देवी के गर्भ से महाराणा प्रताप का जन्म हुआ।

* मुख्य स्थल :→
  1. मामा देव कुंड
  * 2. पृथ्वी की छतरी
  3. झाली रानी के महल

17. भैंसरोड़गढ़ – चित्तौड़

* श्रेणी – जल (चम्बल + बामनी के संगम पर)
* निर्माण – भैंसाशाह व्यापारी + रोड़ा बणजारा द्वारा अपनी बालद को सुरक्षित रखने के लिये।

[भैंसा + रोड़ा = भैंसारोड़ा गढ़]

[बालद – गाय बैलों का समूह]

* उपनाम – राजस्थान का वेल्लौर

* इस दुर्ग पर अलग-2 समय में अलग-2 आक्रमणकारियों का अधिकार रहा।
* क्रमशः – डोडशाखा के परमारों, राठौड़ों, शक्तावतों, चुण्डावतों व अंत में हाड़ाओं का अधिकार रहा।
  Trick – "पराशच हाडा"।
* लेकिन सर्वाधिक समय मेवाड़ के अधिकार में रहा।

* कहा जाता है यह दुर्ग अभयसिंह ने नागौर महाराज नाथा की हत्या के उपलक्ष में लालसिंह चुण्डावत को दे दिया।
* लालसिंह चुण्डावत के उत्तराधिकारी मानसिंह के समय इस दुर्ग पर मराठों का असफल आक्रमण हुआ।

बंदरों की घाटी - गलता (जयपुर)

Note → राजस्थान में मराठों का पहला आक्रमण तारागढ़ (बूंदी) में हुआ।

18. जुनागढ़ - बीकानेर

* श्रेणी - धान्वन + पारिख
* निर्माण - रायसिंह द्वारा कर्मचंद की देखरेख में (1589-1593ई)
* उपनाम - जमीन का जेवर
  - रातीघाटी का किला
* पुराने दुर्ग के स्थान पर नया दुर्ग बनाया जाने के कारण "जुनागढ़" कहलाया।
* दुर्ग की नींव रायसिंह 17 फरवरी 1589 को रखी गई।
* मुख्य प्रवेश द्वार सूरजपोल कहलाता है।

* सूरजपोल पर ही रायसिंह प्रशस्ति लगी है इसी के निकट जयमल - फत्ता की गजारोही मूर्तियां है जो रायसिंह द्वारा लगवाई गई।
* इसका वर्णन फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने अपने यात्रावृतांत में किया।
* दुर्ग में 37 बुर्जियां व 33 करोड़ देवी-देवताओं का मंदिर है जिसमें 'गणपति - सिंह पर सवार' है, जिन्हें "हेरम्भ गणपति" कहा जाता है।
*** 'गंगानिवास' जुनागढ़ का ऐसा भवन है जिस पर "राम-लीला व रास-लीला" के दृश्यों का भव्य चित्रण है।

* प्रमुख स्थल -
  - रामसर व रानीसर नामक जलाशय
  - फूल महल, कर्णमहल, विक्रम विलास
  - अनूपविलास, सरदार निवास
  - गजमंदिर
  - लाल निवास

Extra ⇒
- शती घाटी - बीकानेर
- हल्दीघाटी / पीली घाटी - राजसमंद
- काली घाटी - सरिस्का अलवर (सर्वाधिक तोते + कबूतर + मोर)
- बंदरो की घाटी - गलता (जयपुर)
- फूलो की घाटी - पुष्कर, उत्तराखंड
- सीलिकॉन वैली / घाटी - बैंगलोर
- जटींगा वैली - गुवाहटी (असम)
(पशु - पक्षियों की आत्महत्या का स्वर्ग)

19. नागौर दुर्ग / नगाणा - नागौर

* निर्माण - सोमेश्वर के सामंत कदम्बवास / कैमास - 1154 ई.
* श्रेणी - धान्वन
* प्रारम्भिक नाम - अहिछत्रपुर

Extra
* मोर → मयूर आकृति दुर्ग - मेहरानगढ़ (जोधपुर)
  मोर नृत्य - नट जाती
  मयूर नृत्य - ब्यावर अजमेर
  मोर को प्रिय पक्षी - गरासियां
  मोर पंख को पवित्र - जसनाथ
  मोर मांस पसंद - कंजर
  मयूर बीड़ी - टोंक
  मयूर प्रतीक - भीलवाड़ा
  सर्वाधिक मोर - सरिस्का
  मोरड़ी मांडणा - मीणा

* 1192 ई में इस दुर्ग पर मोहम्मद गौरी का अधिकार हो गया।
* 1400 ई. में फिरोज खाँ ने मुस्लिमों की स्वतंत्र सत्ता स्थापित की।
* 1570 में अकबर ने नागौर दरबार का आयोजन किया। इसी दुर्ग में अकबर ने जैसलमेर के हरराय की पुत्री, बीकानेर के कल्याणमल की पुत्री व

1 अन्य राजकुमारी सहित कुल 3 विवाह किये।
* कुछ समय बाद गजसिंह के अनुरोध पर शाहजहाँ ने यह दुर्ग अमरसिंह राठौड़ को दे दिया।
* इसी दुर्ग में 28 बुर्जियां व 6 प्रवेश द्वार है। जिनमें मुख्य प्रवेश द्वार "सिरेपोल" है व अन्य कचहरी पोल, बिचली पोल, राजपोल, धूंसपोल व सूरजपोल है।

* मुख्य स्थल – अकबरी महल, शीशमहल
अभयसिंह का आभामहल व बादलमहल
– हाड़ीरानी का मोती महल

२०. तारागढ़ – बूंदी

* श्रेणी – गिरी
* निर्माण – हाडा शासक बरसिंह – 1352 ई.
* आकृति – तारे के समान

* दूर से देखने पर तारे के समान दिखाई देता है इसलिए "तारागढ़" कहा गया।
* यह दुर्ग पशु-पक्षियों के भित्ति चित्रण के लिए प्रसिद्ध है।
* भित्ति चित्रों की चित्रशाला बूंदी का निर्माण उम्मेदसिंह व रंगमहल बूंदी का निर्माण छत्रशाल / शत्रुशाल ने करवाया।
* कर्नल टॉड ने बूंदी के राजमहलों को "राजपूताने के सर्वश्रेष्ठ" महलों की संज्ञा दी।
* 1886 में रूडयार्ड किपलिंग ने इस दुर्ग की यात्रा कि और कहा कि यह दुर्ग "भूतों और प्रेतों की करामात" है।
* दुर्ग के भीतर प्रारंभिक समय की पानी की जलघड़ियां व गर्भगुंजन नामक शक्तिशाली तोप रखी है।
* दुर्ग में हाथीपोल, गणेशपोल, हजारीपोल नामक प्रवेश द्वार है। हाथीपोल पर रतनसिंह ने "हाथियों"

की प्रतिमाएं लगवाई थी
* वीरविनोद के अनुसार क्षेत्रसिंह (1362-1382) ने इस दुर्ग को जीतने का प्रयास किया लेकिन असफल रहा।
* बाद में क्षेत्रसिंह के पुत्र राणालाखा / लक्ष्यसिंह ने पिता की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए मिट्टी का दुर्ग बनाकर जीतने का प्रयास किया असफल रहा। क्योंकि इस समय कुंभकरण हाड़ा (कुंभा हाड़ा) पहुंच गया जो वीरगति को प्राप्त हुआ।
* इसीलिए दुर्ग के लिए कहा जाता है "बलहट बंका देवड़ा, करतब बंका गौड़, हाडा बंका गाढ़ में रणबंका राठौड़"
* 1559 में यहाँ के शासक सुरजनसिंह हाड़ा द्वारा मुगलो से मैत्री कर लिए जाने के कारण यह दुर्ग अप्रत्यक्ष रूप से मुगल अधीनता में चला गया।
* मराठों के प्रथम आक्रमण इसी दुर्ग पर हुये।
* दुर्ग से कुछ दूरी पर रानीजी की बावड़ी स्थित है जिसका निर्माण अनिरुद्ध सिंह की पत्नी "नाथावती" द्वारा करवाया गया। यह बावड़ी अपने शिल्प और सौन्दर्य के लिए जानी जाती है इसलिए इसे "बावड़ियो का सिरमौर" कहा जाता है।

* मुख्य स्थल →
1. छत्रमहल
2. अनिरुद्ध महल
3. दुधा महल
4. जीवरखा महल
5. सिलह खाना
6. नौबतखाना
7. अश्वशाला
8. बादल महल
9. सुख महल

*

गोकर्णेश्वर मंदिर - बिसलपुर (टोंक)
(रावण ने महादेव जी को अपने 10 सिर दान किये)

* बूंदी के अन्य स्थल -

1. 84 खंभों की छतरी → इसका निर्माण अनिरुद्ध सिंह ने अपने धाभाई (बड़ा भाई) देवा के लिए करवाया जो देवपुरा गाँव में स्थित है।

2 नवल सागर झील, कनक सागर झील, फूलसागर झील, जैतसागर झील, नवलखाँ झील, काला जी की बावड़ी नारद जी की बावड़ी, भीरिलयों की बावड़ी, नाहरधुंस की बावड़ी स्थित है।

21 मंडोर - जोधपुर

* श्रेणी - गिरी
* निर्माण - जोधपुर के राठौड़ो द्वारा
* प्राचीन नाम - माण्डव्यपुर
* शैली - बौद्ध शैली का एकमात्र उदाहरण

* इसी दुर्ग के निकट *नागदड़ी व नागाद्री झीलें, जहाँ रावण ने मंदोदरी से विवाह किया।
* इस दुर्ग के निर्माण में चूना सीमेंट के स्थान पर लोहे के बड़े-बड़े कीलों का प्रयोग किया।
* वर्तमान में यह दुर्ग भूकंप के कारण नष्ट हो गया।
* यह दुर्ग प्राचीन समय में जोधपुर के राठौड़ों की प्रथम राजधानी रहा।

22 कुचामन दुर्ग - नागौर

* उपनाम - जागीरी किलो का सिरमौर
* निर्माण - जालिम सिंह मेड़तिया

* दुर्ग में स्थित सुनहरी बुर्ज अपने *सोने-चांदी के बारिक

बिद्युत गृह- बूंदी
चौरासीगढ़ - M.P
मुख्य नृत्यांगना गुलाबो नृत्य - कालबेलिया (चकरी)

काम के लिए जानी जाती है।

22 नवलखा दुर्ग - झालरापाटन

* श्रेणी - गिरी
* निर्माण - पृथ्वीसिंह

23. गढ़ पैलेस - कोटा

* श्रेणी - स्थल (चंबल नदी के किनारे)
* निर्माण - जैत्रसिंह (कोटा राज्य का संस्थापक - जैत्रसिंह / माधोसिंह)
* इस दुर्ग में मथुराधीश जी (मथुरेश जी) का मंदिर स्थित है जिसे वल्लभ सम्प्रदाय की प्रथम पीठ माना जाता है।
* दुर्ग के भीतर ही ज्वाला व चांदनी नामक शक्तिशाली तोपें रखी है।
* कोटा में स्थित झाला जी की हवेली के विषय में कार्ल खंडेलवाल ने लिखा कि "यहाँ के चित्रों की खरीया खरीया में शानी नहीं है।"

* मुख्य स्थल →
  - बृजविलास भवन
  - झाला जी की हवेली
  - देवता जी की हवेली
  - बुद्धसिंह बाफना की हवेली
  - नेहर खाँ की मीनार
  - राजस्थान का मिनी हवामहल*
  - घूण्टाघर टावर
  - कोटा संग्रहालय
  - जगमंदिर (किशोर सागर तालाब के मध्य किशोर सिंह ने पत्नी बृजकंवर के लिए बनवाया)

* जापानी टेक्नोलॉजी पर आधारित उद्यान - चम्बल गार्डन
कोटा शैली - में नारियों को भी शिकार करते बताया गया

* सी.वी. गार्डन झील व उद्यान →
* क्षारबाग की छतरियाँ → यह हाड़ौती के हाड़ाओं के शमशान है जिन्हें क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान की सबसे बड़ी छतरियाँ माना जाता है।
* लक्खी बुर्ज
* आशापाला माता मंदिर - हाड़ौती के हाड़ाओं की कुलदेवी है।
* अभेड़ा महल → यह हाड़ौती के हाड़ाओं का शिकारगाह था।

२५. अचलगढ़ - सिरोही

* श्रेणी - गिरि (अचलगढ़ पहाड़ी पर)
* निर्माण - परमार राजाओं द्वारा

* महाराणा कुंभा ने इस दुर्ग मरम्मत करवाई।
* दुर्ग की तलहटी में कवि दुरसा आढ़ा की पीतल की प्रतिमा लगी है।
* दुर्ग में हाथीपोल, गणेशपोल, चम्पापोल हजारीपोल भैरवपोल नामक प्रवेश द्वार है।

* इस दुर्ग पर अलग-२ समयों में (गुजरात) मालवा के कुतुबशाह व मुहम्मद बेगड़ा का अधिकार रहा।

* मुख्य स्थल →
1. ओखारानी के महल
2. अनाज के कोठार
3. सावन-भादो झील*
4. पानी के टांके
5. परमार राजाओं द्वारा निर्मित "खतरे की सूचना देने वाली बुर्ज"

25. शाहबाद दुर्ग - बारां

* श्रेणी - गिरी
* निर्माण - मुकुट मणीदेव

* इस दुर्ग में 18 फीट लम्बी "नवल बाण" तोप रखी थी

26. शेरगढ़ दुर्ग - बारां

* श्रेणी - जल (परवन नदियों के संगम पर)
* निर्माण - ~~मुकुटमणी~~ नागवंशी शासक देवदत्त ने
* प्रारंभिक नाम - कोषवर्धन

* दुर्ग में कोष में लगातार वृद्धि होती थी इसीलिए "कोषवर्धन" कहलाया।
* शेरशाह सूरी ने बूंदी के हाड़ाओं की गतिविधियों पर नियंत्रण रखने के लिए इस दुर्ग को अपनी सैनिक छावनी के रूप में प्रयोग किया व पुन: निर्माण करवाया इसीलिए "शेरगढ़" कहलाया।

* अकबर के समय मालवा पर अकबर का अधिकार हो जाने के कारण लम्बे समय तक मुगलों के पास रहा।

→ बाद में फर्रुखशियर ने यह दुर्ग कोटा के भीमसिंह को दे दिया

* भीमसिंह के ही वंशज उम्मेद सिंह के समय सुयोग्य दिवान झाला जालिम सिंह ने इस दुर्ग का जीर्णोद्धार करवाया व झालाओं की हवेली का निर्माण करवाया।

* जालिम सिंह के समय अमीन खाँ पिंडारी ने अंग्रेजों के कोप / डर से बचने के लिए इसी दुर्ग में शरण ली

* 1818 में अंग्रेजो से सुलह हो जाने के कारण अमीन खाँ पिंडारी को रियासत के रूप में टोंक दे दिया गया।
* 17 जनवरी 1818 को फ्रांसीसी यात्री बुकानन ने इस दुर्ग की यात्रा की।
* दुर्ग में 8 विशाल बुर्जिया थे लेकिन वर्तमान में 5 शेष है।
* वर्ष 2018 में सेफअली खॉन की फील्म "कप्तान" की शुटिंग के कारण यह दुर्ग चर्चाओं का विषय बना रहा।
* शेरगढ़ को "सांपो की शरण स्थली" माना जाता है।

* मुख्य स्थल →
  - कल्याणराय जी का मंदिर
  - आलाओ की हवेली

26. बोरसवाड़ा दुर्ग / टॉडगढ़ दुर्ग — अजमेर

* श्रेणी — गिरी
* निर्माण - कर्नल जेम्स टॉड

* इस दुर्ग का निर्माण बोरसवाड़ा गांव में किया गया उस समय यहां के शासक मुकुंद सिंह थे।
* मुकुंद सिंह कर्नलटाड की सेवाओ से इतने प्रभावित हुये की दुर्ग का नाम "टाडगढ़ "रख दिया।

27. बंसती दुर्ग — सिरोही

* निर्माण — महाराणा कुंभा

28. मचान दुर्ग - सिरोही

* निर्माण - महाराणा कुंभा।

सोनारगढ़ की डबल परकोटा - पाड़ा
पहली महिला चित्रकार - सुरजीत सिंह कौर / चोयल

पहला लिविंग फोर्ट - चित्तौड़
2 - सोनारगढ़
3 - गढ़पैलेस

29. सोढल दुर्ग - श्रीगंगानगर

30. तौलन दुर्ग - राजसमंद

31. पोकरण दुर्ग - जैसलमेर

32. माजी-साहिबा दुर्ग - प्रतापगढ़

33. गलियाकोट दुर्ग - डूंगरपुर

34. पचेवर दुर्ग - टोंक

* इस दुर्ग में धरती पर उतरते ही अप्सरा का चित्रण हुआ।
* इस दुर्ग के भीतर पवन से चलने वाली चक्की - पाड़ा चक्की थी।

35. रामथरा दुर्ग - करौली

36. ऊँट गिरी दुर्ग - करौली

37. सोनारगढ़ - जैसलमेर

* श्रेणी - धान्वन + गिरि (त्रिकुट पहाड़ी पर)
* निर्माण - राव जैसल 12 July 1155 ई.
* उपनाम - उत्तर भड्ड किवाड़
  - जैसाणा
  - स्वर्णगिरी
  - क्षेत्रफल में दूसरा सबसे बड़ा दुर्ग (पहला - चित्तौड़)
  - राज्य का 2nd लिविंग फोर्ट
* आकृति - जहाज के समान

* कहा जाता है कि त्रिकुट पर्वत पर ईसाल ऋषि का आश्रम

था जहाँ त्रेता युग मे काकभुशुण्डी तपस्या किया करते थे।

* यह दुर्ग पीले पत्थरों से बिना चूना, सीमेन्ट से बनाया गया।
* दुर्ग की छत के निर्माण लकड़ी का प्रयोग किया गया है।

* दुर्ग का मुख्य द्वार अक्षयपोल कहलाता है। उसके बाद सूरजपोल, गणेशपोल, हवा पोल नामक प्रवेश द्वार आते हैं।
* दुर्ग को दूर से देखने पर ऐसा लगता है कि मानो "रेत के समुद्र में जहाज लंगर डाले खड़ा है।" इसलिए कहा गया है कि "पत्थर की टांगे व कांठ का घोड़ा आपको यहां तक ला सकता है।"

* दुर्ग का दोहरे घाघरेनुमा परकोटा "कमरकोट" कहलाता है। जिसे स्थानीय भाषा में "पाड़ा" कहा गया।
(पाड़ा चक्की – पचेवर)

* फिल्म निर्देशक सत्यजीत रे ने इस दुर्ग पर सोनार का किला नामक फिल्म डॉक्यूमेन्ट्री लिखी।
* वर्ष 1999 में भारत सरकार के डाकविभाग ने इस दुर्ग पर 5 रुपये का डाकटिकिट जारी किया।

* दुर्ग के भीतर जिनभद्र सूरी पुस्तक भण्डार / जैन पुस्तक भण्डार (भूमिगत) स्थित है जो राजस्थान का सबसे प्राचीनतम व सबसे बड़ा पुस्तक भण्डार है।
इसमे प्राचीनतम ताड़पत्रों, पांडुलिपियों व पोथीग्रंथों का संग्रह किया गया है।
इसी पुस्तक भण्डार मे ताड़पत्रों पर पोथीग्रंथो के रूप मे चित्रित राजस्थानी चित्रकला के सबसे प्राचीनतम चित्र "ओघानिर्युक्ति वृत्ति व दशवैकालिक सूत्र चूर्णी" नामक चित्र सुरक्षित है।
यह दोनो चित्र 1060 ई. के है। जिन्हे भारतीय चित्रकला

को दीप स्तम्भ / प्रकाश स्तम्भ कहा जाता है।

* इसी पुस्तक भण्डार में हस्तलिखित अक्षरों से बना "माता सरस्वती" का चित्र है जिसे "सरस्वती मंदिर" कहा जाता है।

*

* दुर्ग में इतिहासप्रसिद्ध 2½ साके हुये —

1. प्रथम साका – 1299 (अप्रमाणित)

अलाउद्दीन खिलजी V/S मुलराजभाटी

इस समय मुलराजभाटी के साथ कुंवर रतन सिंह वीरगति को प्राप्त हुआ।

2. द्वितीय साका – 1327 ई

फिरोज शाह V/S रावदूदा

इस समय त्रिलोक सिंह भाटी वीरगति को प्राप्त हुआ।

3. तृतीय अर्द्धसाका – 1550 ई.

कंधार नवाब अमीर अली V/S लूणकरणसर

इस समय अमीरअली ने विश्वासघात किया जिससे लूणकरणसर भाटी वीरगति को प्राप्त हुआ फिर भी जीत भाटियों की हो गयी। इसलिए रानियों को जौहर की आवश्यकता नहीं पड़ी। अर्थात् दुर्ग में केसरिया हुआ लेकिन जौहर नहीं हुआ।

प्रमुख स्थल → * लक्ष्मीनारायण जी का मंदिर →
- निर्माण - राव लाखन

इस मंदिर के किवाड़ सोने-चांदी के बने है।

* जैसलू कुंआ → इस कुंए के निर्माण श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र से निर्माण हुआ।

* ऋषभदेव, पार्श्वनाथ, संभवनाथ, गजमंदिर, राजमहल, रंगमहल, गजविलास, जवाहविलास
- मोतीमहल आदि।

* जैसलमेर के अन्य पर्यटन स्थल →

- बड़े मिया की हवेली ~~रखी~~ राखी हवेली
* सालिमसिंह की हवेली (7 मंजिला - 5 पक्की + 2 लकड़ी)
2010 जर्मनी पत्रकारो ने इस हवेली की यात्रा की

इसका निर्माण सालिम सिंह ने अपने पिता के निवास के लिए करवाया। 7 मंजिला इस हवेली की प्रथम 5 मंजिले पक्की व अंतिम 2 मंजिले लकड़ी से बनाई गई है। वर्तमान में इस हवेली के संरक्षक हमीद उद्दीन प्यारे मियां है। 2010 में जर्मन पत्रकारो ने इस हवेली की यात्रा की व प्यारे मिया को बधाई दी। इस हवेली की ऊपरी मंजिल को मोती महल / जहाज महल कहते है।

* नथमल जी की हवेली -
यह हवेली अपनी पत्थरो की बारिक कटाई के लिए प्रसिद्ध है। जिसका निर्माण हाथी व लाल दो भाईयो ने इस संकल्प के साथ शुरु किया कि "ऐसी कला दोबारा नहीं देखाएगें" इसलिए निर्माण के इन दोनो भाईयो ने अपने हाथ कटवा लिये।

पटवों की हवेली → निर्माण - सेठ गुमान चंद बाफना

यह हवेली अपने पत्थरो की बारिक कटाई के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

II grade

38. रणथंभौर – सवाई माधोपुर

* श्रेणी – गिरि (7 ऊंची नीची पहाड़ियों के मध्य)
* निर्माण – अजमेर के चौहानो द्वारा / रणथम्भ देव चौहान
* उपनाम → दुर्गाधिराज / दुर्गों का राजा
  – बख्तरबंद दुर्ग

* कहा जाता है कि यह दुर्ग 7 ऊँची नीची पहाड़ियों पर बना है इसलिए अबुल- फजल ने लिखा कि "यह दुर्ग बख्तरबंद है बाकि सब नंगे है,"

* रण की घाटी में स्तम्भ की तरह खड़ा होने के कारण "रणस्तम्भपुर" कहलाया है जो बाद में बिगड़ कर "रणथंभौर" हो गया।

* दुर्ग का मुख्य द्वार नौलखा दरवाजा कहलाता है उसके बाद अंधेरी दरवाजा (त्रिपोलिया दरवाजा) आता है

* 1291 में कड़ामाणिपुर शासक जलालुद्दीन महमूद खिलजी ने हम्मीर के समय विशाल सेना सहित आक्रमण किया।

* जलालुद्दीन खिलजी यह कहता हुआ चला गया कि "मैं एक मुसलमान के बाल पर सैंकड़ो रणथंभौर न्यौछावर कर सकता हूँ"।

* 1299 में जलालुद्दीन खिलजी के भतीजा व दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने उलुक खॉ व नुसरत खॉ के नेतृत्व में रणथंभौर आक्रमण के लिए सेना भेजी। दोनो की सेनाओं ने रणथंभौर के कुंजी

* रणथम्भौर की रानी प्रसिद्ध बाघिन "मछली" पर अमेरिका की लेखिका "कैंट्योकोब्स" ने एक पुस्तक लिखी है। उसका नाम " द थ्री वेज टू डिसएपियर"। यह पुस्तक बाघों के संरक्षण और जीवन पर आधारित है।
* बाघिन मछली ने बाघों की संख्या बढ़ाने में योगदान को देखते हुए 2013 में डाक विभाग की ओर से बाघिन मछली पर "डाक टिकिट" जारी किया गया था। इसके बाद वन्यजीव फिल्म मेकर नल्ला मत्थु ने 2018 में " द मोस्ट फैमस टाइगर मछली" नाम की डाक्युमेन्ट्री बनाई थी।

---

* इसी समय यहाँ का शासक कहे जाने वाले झाईन दुर्ग की ओर से आक्रमण किया।

* उस समय हम्मीरदेव चौहान कोटियज्ञ यज्ञ का सम्पादन करके मुनिव्रत में व्यस्त था, इसलिए भीमसिंह व धर्मसिंह के नेतृत्व में सेना भेजता है।

* दोनों की संयुक्त सेनाओं के मध्य हिन्दुवाद / हिन्दुवाटी की घाटी में भयंकर युद्ध होता है जिसमें उलुग खाँ व नुसरत खाँ की सेना परास्त हो गई। इसी बीच भीमसिंह व धर्मसिंह लूट का धन लेकर रणथंभौर की ओर प्रस्थान करते है लेकिन धर्मसिंह रास्ते में शिकार खेलने रुक जाता है, पीछे से सूचना मिलती है कि उलुग खाँ व नुसरत खाँ ने पुन: आक्रमण कर दिया। उस समय हम्मीर का सेनापति धर्मसिंह व अलाउद्दीन का सेनापति नुसरत खाँ मारे जाते है और अधिक सेना की आवश्यकता होने व नुसरत खाँ की मृत्यु का समाचार सुनकर अलाउद्दीन खिलजी स्वयं सेना सहित रणथंभौर पहुंच जाता है।

* 8 महीने की घेराबंदी के बाद अलाउद्दीन ने छलकपट नीति का प्रयोग किया। व दुर्ग के 2 द्वारपाल

संत पीपा की माता - लक्ष्मीवती * मार्ले मिंटो - 1909
* मांटेग्यू चेम्सफोर्ड - 1919

रणमल व रतिपाल को राजा बनाने का प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया।
* रणमल व रतिपाल द्वारा दुर्ग के गुप्त रास्ते बता देने के कारण अलाउद्दीन की तुर्की सेना दुर्ग के भीतर पहुंच गई।
* इस समय अलाउद्दीन दुर्ग के जल स्रोत मे गौ मांस व हड्डी का चूरा मिलवा देता है।
* जिसके कारण भूखे व प्यासे राजपूत सैनिक हम्मीरदेव सहित लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुये।
* कुछ विद्वानो के अनुसार हम्मीर देव ने अपना शीश (सिर) काटकर भगवान शिव को समर्पित कर दिया।

* 11 जुलाई 1301 वर्षा ऋतु में दुर्ग पर अलाउद्दीन का अधिकार हो गया। इस समय अमीर खुसरो अलाउद्दीन के साथ था जिसने लिखा कि "कुफ्र का गढ़ अब इस्लाम का घर हो गया।"

* इस युद्ध का वर्णन अमीर खुसरो की पुस्तक खजाईन-उल-फ़तूह (तारीख-ए-अलाई) मे मिलता है।
* विजय के पश्चात हम्मीर की पत्नी रंगादेवी (लक्ष्मीवती) जौहर करती है जो राजस्थान के इतिहास का प्रथम जौहर माना जाता है।
* इसी समय हम्मीर की बेटी पद्मला (देवलदे) पद्मसरोवर में कूदकर जलजौहर करती है। जो राजस्थान के इतिहास का एकमात्र "जलजौहर" माना जाता है।

* अलाउद्दीन शासन की बागडोर उलुग खाँ को सौंपकर दिल्ली चला जाता है। तथा रणमल व रतिपाल को यह कहकर मरवा देता है कि "जो अपने स्वधर्मी राजा के प्रति निष्ठावान नहीं रह सके, उनसे स्वामीभक्ति की

क्या उम्मीद की जा सकती है।"

* हम्मीर ने अपने पूरे जीवन में 17 युद्ध किये, जिनमें 16 में विजयी रहा।
* अलाउद्दीन के आक्रमण का कारण विद्रोही सेनापति मीरमोहम्मद (मंगोलियन) को शरण देना माना जाता है क्योंकि यह लूट का धन लेकर हम्मीर की शरण में आ गया था।
* कुछ विद्वानों के अनुसार मीरमोहम्मद का अलाउद्दीन की पत्नी चिमना के साथ प्रेम संबंध होना माना जाता है
* यह राज्य का ऐसा दुर्ग है जिसमे मंदिर, मस्जिद, और गिरिजाघर है।

* मुख्यस्थल →
  - बादलमहल, सुपारिमहल, जोगीमहल, हम्मीरकेमहल
  - हम्मीर की कचहरी
  - शिव मंदिर
  - जैन मंदिर
  - पीर सदरुद्दीन की दरगाह
  - कुकराज पहाड़ी (कुकराज की छतरी - कुत्ते की छतरी)
  - जौरा - भौंरा अन्नभंडार
  - गुप्त गंगा।
  - त्रिनेत्र गणेश मंदिर
  - जोगसिंह की 32 खंभों की छतरी
  - रनिहाड तालाब

39. चित्तौड़ दुर्ग - चित्तौड़

* श्रेणी - गिरि (गम्भीरी + भेड़च नदियों के संगम पर मेसा के पठार की चित्रकूट पहाड़ी पर)
* निर्माण - चित्रांगद मौर्य (7 वीं सदी)
* आकृति - व्हेल मछली के समान
* समर्पित - हनुमान जी को (मण्डोर प्रशस्ति में उल्लेखित)
* प्रारम्भिक नाम - चित्रकूट दुर्ग
* अन्य नाम → व्हेल आकृति दुर्ग
  - राज्य का प्राचीनतम दुर्ग
  - महाभारत कालीन दुर्ग
  - क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा दुर्ग (13 वर्ग किलोमीटर)
  - राज्य का प्रथम लिविंग फोर्ट
  - राज्य का सबसे रक्त रंजित दुर्ग
  - राज्य का प्रथम दुर्ग जिसमे कृषि कार्य होता है
  - किलो का सिरमौर
  - राजस्थान का गौरव
  - दक्षिण -पूर्व का प्रवेश द्वार
  - खिज्राबाद (1303 में अलाउद्दीन अपने पुत्र खिज्र खां के नाम पर)

* यह दुर्ग धान्वन को छोड़कर सभी श्रेणियों का पालन करता है।
* चित्रकूट पहाड़ी पर बना होने के कारण 'चित्रकूट' कहलाया जो बाद में बिगड़कर 'चित्तौड़' हो गया।
* दुर्ग से कुछ दूरी पर मानमौर्य द्वारा बनवाया गया "मानसरोवर तालाब" है। जहाँ से कर्नल जेम्स टाड

को विक्रम संवत 770* का शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमे चार नाम क्रमश: माहेश्वर, भीम, भोज, मान लिखे है।

- 734 ई. में इस दुर्ग पर बप्पारावल (कालभोज) का अधिकार हो गया।
- पन्नाधाय के त्याग व बलिदान की गाथाएं इसी दुर्ग से जुड़ी है। जिसने यहाँ के राजकुमार उदयसिंह को पासी पुत्र बनवीर से बचाने के लिए पुत्र चंदन के प्राणो की बाजी लगा दी। बाद में उदयसिंह को खतरे में देखकर पालन-पोषण के लिए कुम्भलगढ भेज दिया।

- दुर्ग में 7 प्रवेश द्वार व उत्तर में एक आपातकालीन खिड़की है जिसे लखोटा की बाड़ी कहलाती है।

- मुख्यद्वार पाडनपोल कहलाता है। जिस पर रावत बाघसिंह का स्मारक है। इसी पर महाराणा कुंभा द्वारा मंडोर से हनुमानजी की प्रतिमा लाकर लगवाई गई थी।

- दूसरा प्रवेश द्वार भैरवपोल कहलाता है जो कल्ला जी के गुरु "भैरव" को समर्पित है। इसी के समीप जयमल व फत्ता के स्मारक व वीरवर कल्लाजी राठौड़ की छतरी है। यहाँ आश्विन शुक्ल नवमी के दिन "कल्ला जी का मेला" भरता है।

- इसके बाद हनुमान पोल, गणेशपोल, जोड़नपोल (जोड़ला पोल), लक्ष्मण पोल, रामपोल नामक प्रवेश द्वार आते है।

- रामपोल के समीप बनवीर द्वारा बनवाया गया तुलजा भवानी मंदिर है।

* इस दुर्ग में इतिहास प्रसिद्ध 3 साके हुए है।

1 प्रथम साका - 1303 ई. →

अलाउद्दीन खिलजी V/S रावरतनसिंह

- जौहर - रानी पद्मिनी
- सेनापति - गौराबादल

- इस समय अलाउद्दीन के आक्रमण का कारण रानी पद्मिनी को प्राप्त करने की लालसा माना जाता है।
- अलाउद्दीन से रानी पद्मिनी की सुन्दरता का बखान रतनसिंह के विद्रोही तांत्रिक राघव चेतन ने किया। जबकि रतनसिंह को पद्मिनी के बारे में रत्ना प्रजाति के हीरामन तोते ने बताया।
- इस युद्ध का वर्णन मलिक मोहम्मद जायसी "पद्मावत" ग्रन्थ में मिलता है।
- विजय के पश्चात अलाउद्दीन दुर्ग का नाम बदलकर खिज्राबाद कर देता है व शासन की बागडोर पुत्र खिज्र खाँ को सौंपकर दिल्ली चला जाता है। बाद में खिज्र खाँ भी शासन की बागडोर मालदेव मुछाला को सौंपकर दिल्ली चला जाता है।

2. दूसरा साका - 1534 ई. →

बहादुरशाह V/S विक्रमादित्य (अल्पव्यस्क)

- जौहर → माता कर्णावती / कर्मावती
- सेनापति → रावत बाघसिंह व भैरवदास सोलंकी वीरगति को प्राप्त [बाघ - भैरव]

* आक्रमण के समय विक्रमादित्य अल्पवयस्क था। इसलिए शासन की सम्पूर्ण बागडोर माता कर्णावती के हाथ में थी।

* कर्णावती ने हुमायूं को राखी भेजी लेकिन वह समय पर नहीं पहुंच पाया इसलिए बहादुरशाह दुर्ग को जीतने में सफल रहा।

3. तीसरा साका - 1567 - 68 ई.

अकबर v/s उदयसिंह

• सेनापति → जयमल मेड़तीया, फत्ता सिसोदिया
• जौहर → फूलकंवर (फत्ता की पत्नी)

• शस्त्रागार → जैतमल राठौड़ (कल्ला जी)
• मुख्य द्वारपाल → ईसरदास राठौड़

* इस समय अकबर ने दुर्ग के बाहर गरगच्च व पासिब नामक चबूतरे व मोहनमगरी का निर्माण किया तथा अरोंग व ढेकुली नामक यंत्रों का प्रयोग किया।

* दुर्ग के भीतर से अग्निबाण बरसाये गये तथा मगरबी व मजनिक यंत्रो से उदयसिंह द्वारा आग व पत्थर बरसाये गये।

* इसी समय जयमल मेड़तियां को संग्राम नामक बंदूक की गोली लग जाती है लेकिन अकबर 8 माह की घेराबंदी के बाद भी दुर्ग को नहीं जीत पाता इसलिए गंभीरी व बेड़च नदियों के कंदराओं से दो सुरंगे डलवाता है। 1 सुरंग में 80 मण व दूसरी सुरंग में 120 मण बारूद विस्फोट किया जाता है।

* इसी बीच जब अकबर हाथी पर बैठकर दुर्ग के भीतर प्रवेश करने का प्रयास करता है तो मुख्य द्वारपाल ईसरदास राठौड़ अकबर को रोक देता है और कहता है कि " मेरे जीवित रहते प्रवेश नहीं कर सकते।"

* वह एक हाथ से हाथी की सूंड पकड़ता है व दूसरे से कटार गोप देता है, लेकिन अकबर हाथी के पैरों से कुचलता हुआ दुर्ग के भीतर चला जाता है।

* इस युद्ध में कल्ला जी की वीरता को देखकर अकबर ने इन्हें दो शीश व चार भुजाओं वाले लोक-देवता की संज्ञा दी। जयमल व फत्ता की वीरता से इतना प्रभावित हुआ कि आगरा दुर्ग के सामने जयमल - फत्ता की गजारोही मूर्तियाँ लगवा दी जो औरंगजेब के काल तक रही बाद में इन्हे हटवा दिया गया।

* इसी समय बीकानेर के रायसिंह ने भी जूनागढ़ के सामने जयमल फत्ता की गजारोही मूर्तियाँ लगवाई जो वर्तमान में भी लगी है। इनका वर्णन फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने अपने यात्रा वृतांत में किया।

* युद्ध के समय उदयसिंह लखोटा की बाड़ी के रास्ते से कुम्भलगढ़ भेज दिया।

* विजय के पश्चात् अकबर शासन से सम्पूर्ण बागडोर आसफ खाँ को सौंपकर दिल्ली चला जाता है व दुर्ग में लगे अष्टधातु के किवाड़ो को उखाड़कर ले जाता है।

* इस युद्ध में सर्वाधिक नेतृत्व व योगदान मेड़ता, नागौर के लोगों का रहा है।

* मुख्य स्थल →

- चल फिर शाह की दरगाह (दुर्ग के बाहर)
- रावत बाघसिंह का स्मारक (मुख्यद्वार पर पाडनपोल)
- कल्लाजी राठौड की छतरी (भैरव पोल के समीप)
- जयमल फत्ता के स्मारक (भैरव पोल के समीप)
- तुलजा भवानी मंदिर (बनबीर द्वारा रामपोल के समीप
- जाली बाग
- सप्तबीसी देवरी (27 जैनमंदिरो का समूह
- विजय स्तम्भ व कीर्ति स्तम्भ
- जैन कीर्ति स्तंभ
- समीदेश्वर मंदिर (वर्तमान में मोकल जी का मंदिर)
- कुम्भ श्याम मंदिर
- कालीका माता मंदिर (राज्य का सबसे प्राचीन सूर्य मंदिर)
- श्रृंगार चंवरी (वर्तमान मीरा मंदिर)
- रैदास की छतरी (मीरा के गुरु)

- कुम्भश्याम तालाब
- पद्मिनी तालाब
- जयमल जी तालाब
- हाथी कुण्ड
- जौहर कुण्ड (भाद्र शुक्ल दशमी) जौहर मेला लगता है)
- घी - तेल की बावड़ी
- त्रिपोलिया दरवाजा
- लखोटा की बाड़ी
- गोरा - बादल महल
- पद्मिनी महल
- * नौलखा अन्नभंडार
- नौलखा बुर्ज
- सलुम्बर की हवेलियां
- कंवरपदा के खण्डर

- रामपुरा की हवेलियां
- खातण रानी महल
- हाथियों का बाड़ा

* मीरा मंदिर → निर्माण → 1448 ई. महाराणा कुंभा के समय भण्डारी वेल्लोक / वेल्का द्वारा /

श्रृंगार चंवरी के रूप में महाराणा कुंभा की पुत्री रमाबाई / वागेश्वरी के पाणिग्रहण के लिए)

* यह एक धार्मिक स्थल है जिसे 1568 से मीरा मंदिर कहा गया। इसी के सामने मीरा के गुरु रैदास जी की छतरी है।

* जैन कीर्ति स्तम्भ → निर्माण → जीजाकुशाह बघेरवाल नामक जैन व्यापारी द्वारा

* यह 7 मंजिला व 75 फीट ऊंचा है जो आदिनाथ को समर्पित है)

* विजय स्तम्भ → विष्णु को समर्पित

* शिल्पकार — जैता-कुपा (बाद में नापा, पुजा, पोमा)

- उपनाम →

विष्णुध्वज स्तम्भ — अत्रिनाथ द्वारा

कुतुबमीनार से श्रेष्ठ इमारत — कर्नल जेम्स टॉड द्वारा

रोम के टार्जन → फर्ग्यूसन द्वारा

मूर्तियों का अजायबघर — इतिहासकार गार्नेट द्वारा

भारतीय मूर्ति कला का शब्द कोष / विश्व कोष

कीर्ति स्तम्भ → (डॉ. निलीमा मिश्रा द्वारा)

राजस्थान पुलिस का प्रतीक

(माध्यमिक शिक्षा बोर्ड)

निर्माण →

महाराणा कुंभा (1440–1448 के मध्य 8 वर्ष लगे)

डा. निलिमा मिश्रा के अनुसार (1440 – 1460 के मध्य)

निर्माण का कारण →

महाराणा कुंभा द्वारा सारंगपुर / मालवा (M.P) विजय के उपलक्ष में

* सारंगपुर युद्ध -1437 → इस युद्ध में महाराणा कुंभा ने महमूद खिलजी को परास्त किया। इसी विजय के उपलक्ष में विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया।

* बनावट → 9 मंजिला 120 फीट ऊंचा (वर्तमान 122 फीट) 30 फीट चौड़ा। 157 सीढ़ियां लगी है।

• मुख्य प्रवेश द्वार पर भगवान विष्णु की प्रतिमा लगी हुई है। इसलिए उपेन्द्रनाथ डे ने इसे विष्णु ध्वज स्तम्भ कहा।

* शिल्पकार → जैता - कृपा (नापा, पुंजा, पोमा ने काम किया बाद में)

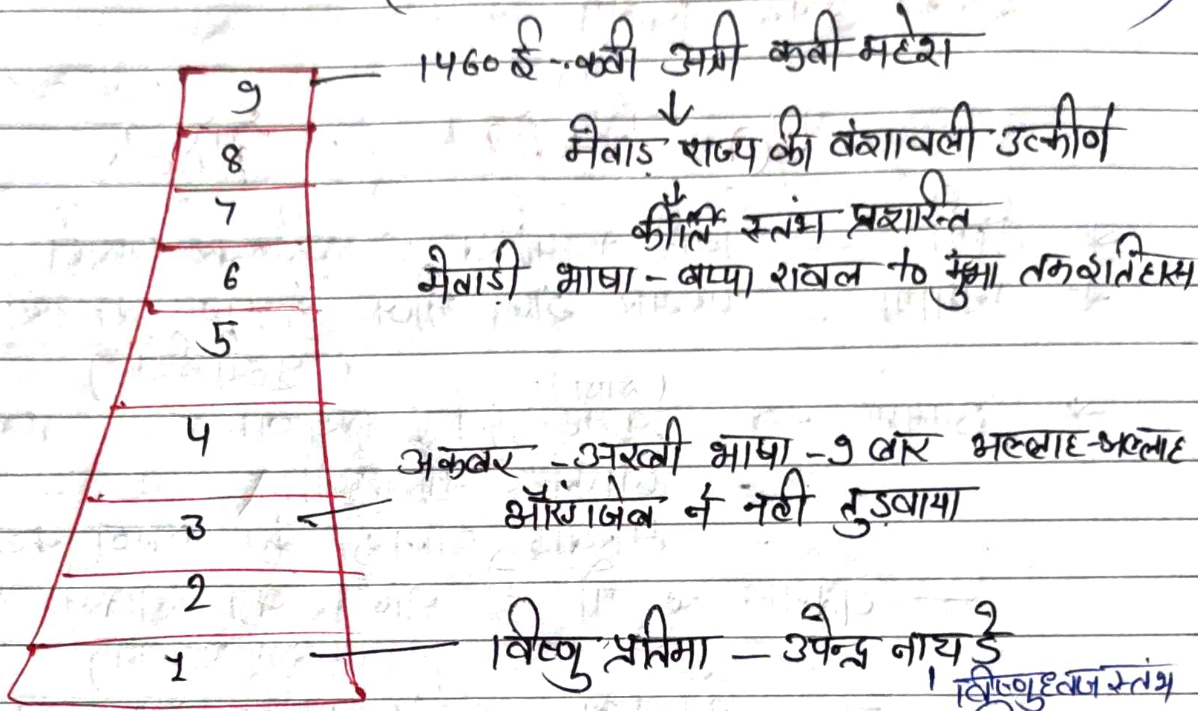

* 9 वीं मंजिल पर कवि अत्री व कवि महेश ने मेवाड़ी भाषा में मेवाड़ राज्य की वंशावली उत्कीर्ण की जिसे किर्ति स्तम्भ प्रशस्ति कहा गया इसलिए विजय स्तम्भ के नाम किर्ति स्तम्भ हो गया।
* इस प्रशस्ति में बप्पारावल से लेकर महाराणा कुम्भा तक का इतिहास मिलता है।
* विजय स्तम्भ के भीतर हिन्दु - देवी देवताओं की अत्यधिक प्रतिमाएं है इसलिए इसे भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष या शब्दकोष कहा जाता है।
* फर्ग्युसन ने विजय स्तम्भ की तुलना रोम के टार्जन से की है, लेकिन कहा कि "इसकी कला तो उससे भी अद्भुत है"
* कर्नल टॉड ने इसे कुतुबमीनार से भी श्रेष्ठ इमारत बताया।
* 1857 में बिजली गिरने के कारण (9वीं मंजिल) खंडित हो गया जिसका पुनः निर्माण स्वरूपसिंह ने करवाया।
* 15 August 1949 में भारत सरकार के डाक विभाग ने इस पर 1 रु मूल्य का डाक टिकिट जारी किया।

* वर्तमान में राजस्थान पुलिस व माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रतीक चिह्न विजय स्तम्भ है।

40. सिवाणा – बाड़मेर

* श्रेणी – गिरि + पारिख (हल्देश्वर पहाड़ी)
* निर्माण – परमार राजा भोज के पुत्र वीरनारायण पंवार द्वारा (954 ई. में)

* उपनाम → (झाड़ी) कुमट दुर्ग / कुम्थाणा (थोक)
  - जालोर की कुंजी
  - मारवाड़ शासकों की शरण स्थली
  - वर्तमान दुर्गों में राज्य का सबसे प्राचीन दुर्ग (10th राज. अध्ययन)
  - खैराबाद (अलाउद्दीन द्वारा)

* कुमट झाड़ी की अधिकता के कारण "कुमट दुर्ग" कहलाया
* जालोर जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित होने के कारण "जालोर की कुंजी" कहलाया।
* यह दुर्ग संकटकाल में मारवाड़ शासकों की "शरण स्थली" रहा।
* रावचन्द्र सेन व मालदेव ने अपने संकट के समय इसी दुर्ग में बिताया।
* इस दुर्ग में इतिहास प्रसिद्ध 2 साके हुए –

1. प्रथम साका 1308 →

अलाउद्दीन खिलजी V/S शीतलदेव चौहान
(खैराबाद)

* इस समय भावले नामक विद्रोही ने दुर्ग के जलस्रोत भांडेलाव तालाब में गौ मांस व हड्डी का चूरा मिला दिया, इसलिए शीतल देव चौहान को दुर्ग का दरवाजा द्वार खोलना पड़ा और वीरगति को प्राप्त हुआ।

* इस समय की एक कहावत प्रचलित है "राय का भाव रात ही गया")

दूसरा साका - 1582ई →
अकबर V/S कल्ला राव मसोत

* इस समय अकबर की सेना का नेतृत्व मोटाराजा उदयसिंह ने किया।

* मुख्य स्थल → हल्देश्वर महादेव
कल्ला रायमलोत का थड़ा

4. जालौर दुर्ग - जालौर

* श्रेणी - गिरी (सुवर्णगिरी / सोनागिरी पर सुकड़ी नदी के किनारे)
* निर्माण - प्रतिहार शासक नागभट्ट-I (8वीं सदी)

* उपनाम → सुवर्णगिरी, सोनागिरी, सोनलगढ़
- सामरिक दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण
(जालौर) - कनकाचल काकमुखी दुर्ग
- जलालाबाद (1310/11 में अलाउद्दीन द्वारा)

* शिलालेखों में जालौर का नाम "जाबलीपुर" व दुर्ग का नाम 'सुवर्ण गिरि / सोन गिरी' मिलता है। इसलिए जालौर के शासक सोनगरा चौहान कहलाया।
* यह दुर्ग दिल्ली से गुजरात जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित है इसलिए इसे सामरिक दृष्टि / राजनीति से सबसे महत्वपूर्ण किला माना जाता है।
* दुर्ग पर विभिन्न समयों में परमारों, चौहानो, सोलंकीयो राठौरो और तुर्कों का अधिकार रहा।

* 1310/11 में अलाउद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर विशाल सेना सहित आक्रमण किया। इस समय यहाँ का शासक

कान्हड़देव चौहान था।

* अलाउद्दीन के आक्रमण का कारण कान्हड़देव के पुत्र वीरमदेव का अलाउद्दीन की पुत्री फिरोजा से विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा देना माना जाता है।

* आक्रमण के समय दहिया बीका ने विश्वास घात किया और दुर्ग के गुप्त रास्ते बता दिये और इस कारण अलाउद्दीन दुर्ग को जीतने में सफल रहा।

* कान्हड़देव व उसका पुत्र वीरमदेव वीरगति को प्राप्त हुये। वीरमदेव का सिर काटकर गुलाबिहिश्त (फिरोजा की धायमां) दिल्ली ले गयी। जिसके साथ फिरोजा ने यमुना नदी में कूदकर अपने प्राण त्याग दिये।

* विजय के पश्चात अलाउद्दीन शासन की बागडोर सेनापति कमालुद्दीन गुर्ग को सौंपकर दिल्ली चला गया। और

* दुर्ग के भीतर परमार राजाभोज द्वारा बनवाई गई संस्कृत पाठशाला को तोड़कर तोपखाना मस्जिद में बदल दिया। जिसे वर्तमान में "अलाउद्दीन की मस्जिद" कहा जाता है।

* स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान मथुरदास माथुर, फतेहराज जोशी, गणेशीलाल व्यास, तुलसीदास राठी जैसे क्रांतिकारियों को इसी दुर्ग में कैद किया गया।

* प्रमुख स्थल :-> जाबाली कुंड

सोहनबाग नामक दो जलाशय

मलिक शाह पीर की दरगाह

दहियों की पोल

जोगमाया मंदिर

प्राचीन जैन मंदिर

2 मंजिला रानी महल

मानसिंह के महल

42. मंडरायल दुर्ग – करौली

43. बैर दुर्ग – भरतपुर

44. बाड़ी दुर्ग – धौलपुर

(उपनाम – किला अफगान)

45. कोट खास्ता दुर्ग – जालौर

46. भद्राजुन दुर्ग – बीकानेर निर्माण (रत्नचन्द्र सेन)

47. पुंगल दुर्ग – बीकानेर

48. इन्द्रगढ़ – बूंदी

49. कनौज दुर्ग – चित्तौड़

50 गंगरार दुर्ग – चित्तौड़

51 शिवाड़ दुर्ग – सवाई माधोपुर

52 खंडार दुर्ग – सवाई माधोपुर

(इस दुर्ग में अष्टधातु से बनी 'शारदा' तोप रखी है)

53 - अमरगढ़ दुर्ग – सवाई माधोपुर

* 1290 में जलालुद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर आक्रमण किया तब हम्मीर का सेनापति 'गुरदास सैनी' लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ लेकिन हम्मीर ने पुनः अधिकार कर लिया।

54. काकोड़ का किला – टोंक

55. भूमगढ़ – टोंक

56 सराड़ा दुर्ग – उदयपुर

57. सज्जनगढ़ दुर्ग - उदयपुर
(उपनाम - उदयपुर का मुकुटमणि)

58. कोटड़ा दुर्ग - बाड़मेर

59. मोरिजा दुर्ग - जयपुर

60 करणसर दुर्ग - जयपुर

61. चौमू दुर्ग - जयपुर
(उपनाम - चौमुँहागढ़, धाराधार गढ़, रघुनाथ गढ़)

62 माधोराजपुरा दुर्ग - जयपुर (माधोसिंह I द्वारा)
* यह भूमि दुर्ग का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है जो जयपुर की 'फागी' तहसील में है।

63. मनोहरथाना दुर्ग - झालावाड़
* यह जलदुर्ग का उदाहरण है जो परवन + कालीखाड़ के संगम पर है। इसमें भीलों की देवी "विश्वती" का मंदिर है।

64. टाडगढ़ दुर्ग - अजमेर
(उपनाम - बोरसवाड़ा) निर्माण - कर्नल जेम्स टॉड

65. केसरीगढ़ दुर्ग - अजमेर

66. सरवाड़ दुर्ग - अजमेर
* इस दुर्ग में गर्भभंजन, कटकबिजली, रामबाण, श्यामबाण नामक तोपें रखी है।

67. बनेड़ा दुर्ग - भीलवाड़ा

68. अमरगढ़ व हम्मीरगढ़ - भीलवाड़ा

69. शेरगढ़ दुर्ग - धौलपुर
निर्माण - रावमालदेव

70. तिजारा दुर्ग - अलवर
निर्माण - राव बलवन्त सिंह

71. केसरोली दुर्ग - अलवर (निर्माण - यदुवंशी शासकों द्वारा)

72. नीमराणा दुर्ग - अलवर (उपनाम - पंचमहल)
निर्माण - चौहान शासकों द्वारा

73. भानगढ़ व अजबगढ़ दुर्ग - अलवर
74. राजगढ़ दुर्ग - अलवर (निर्माण - राजाप्रताप सिंह)

75. कांकन बाड़ी दुर्ग - सरिस्का अलवर

76. छापा दुर्ग - बाड़मेर
77. जूना दुर्ग - बाड़मेर
78. किलोण दुर्ग - बाड़मेर निर्माण - राव भीमोजी

79 इंदौर का किला - अलवर
* इसे दिल्ली सल्तनत की आंख की किरकिरी कहा जाता है)